What will I write 10

What will I write?
I spent across fifty springs of lifeNight after day,
And day after night.
Breakfast, lunch, dinner,
They never changed.
My heart is still searching for beauty amidst this invariably.
I want to write on this
For some more time.

Or shall I write

About the pain of some of the cats and dogs of my locality,

Their food has decreased since the lockdown started

They have become thin,

I used to give them food on the street outside my house After my meal,

Mixing the leftover rice and fish,

After some days some people of the locality objected,

"You give them food and they come to eat,

Then they piss and excrete at that place only, everyday.

Stop this, you go to the ground if you want to feed them"

What will I write?

In the first place, I didn't believe in it.

Then I actually saw them doing the same
Almost everyday.

They either piss or excrete on that spot!
I stopped giving them food.
Even today afternoon and night I saw
The dogs are shouting sitting on the road,
The cats come running on me
As and when they see me.

The marks of hunger are prominent on their physique What will I write?

Lately, I am giving them some sweet balls

In a bit of a distant place.
They lick, eat and tears
Roll down their faces!
What will I write?

Life goes on,
Night after day,
And day after night.
Shall I feel this beautiful Earth?
Search the beauties amongst the ugliness?
Or shall I stare at the faces of
These hungry helpless animals?
Will I write the pathetic list of their miseries?
What will I write?I am thinking about more.

(10) (ms/8 (31) (10) 130 MAR Gol 21? वन्हान्ति कम्ड (विहिट्ट लिस्पर्ड नि लिए के वि ल्पट्ट अहिं बडे- Wal (Awader) whole lindo = 2 क्षीया (व्यापाण) टिविम्ने म्हान अटि (असम् स्पित अर्ग । लिंडाए हिंदी अब विकार Palée Palusson 1 Mas Miso सिमा वादा : कि के कि (परीय के कर् व्यक्त त्रिक विक विक विषक व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त नीन रहें (निक (हरी)

ल्पाश्च अहिंद अहिंद अश्चित ल्पेड स्वाह प्रिवाश्च CHANG इपिएगुड़ मुड़ नर्ड भाज ६७७ मार रबाइर , अर्थिकार्थि की निर्देश के प्रमेश कर्षिय विक्रमाण करिया ec Graph (अदि (मेंग दिश किं) (अदि प्रति (क्षित्र (क्षेत्र) सिक्षीय अपन्ताली करिं यात्र। वर्ष अरुग्य क्षेत्रम कि लिस्ट जिलिका ? विषक्षि विश्वीय क्षिण क्रमान जिला ि। ने किया अपि अपिक किन सिविन स्पेप (% बार्षिक घार खिल्लिय की (बुक्रीय का (ब) बान्डमण व्यक्। (अड्रपे: ड्रपेन - (अट्रपे ड्र<u>में</u> डर्प

Grape हेर्स्ट हाटि (पडामार्ज should say prode as किर्मेण्ये ह्या है। प्यारिक व्यारिक मिल्ल हिली िमार्थिक (प्रश्नार्थे) उति - यानी योही अर्थ कार्च अप la firsta Galai ? क्ष्माण्ये अदिकत्ते देशका १३०१ १८० । तन्ती इसि कर निष्ठ हेन्द्रिन 200 2 2 0 Colo (3) 1 51(4) 51/5 (A) - (6) 51 (A) 5 निष (पर निष्) 120 Misro Galas 7 3/01 2(v. 6/m

m(no 13 016 ONG 31(00 do (Un) (कर संभाड़ में कियों कि Gittle कड़िस ? र्जुन्मुं (क इंदिन रिक्निश्ति किसेन्मिर्ड अपराह्म (म प्यास्थि पर क्षिणियादि एथ्रीकादि नाम 4/22(W6_ A(26) - (20 (00 Queen a) and as) (mister @(no or a) @100 00 200 200) कि सिराय क्षित्री हिन्दी क्षिति विषयकि व्यक्ष

क्या लिखूं मैं ?10

या टट्टी या तो -पिसाब करते हैं।

क्या लिखूं मैं ? पचासों बसंत पार करके आया. दिन के बाद रात. और रात के बाद दिन. ब्रेकफास्ट,लंच,,डिनर, बदला नहीं कुछ भी, विविधता से शुन्य जीवन में भी, मन सौंदर्य को ढूंढ़ता है, इसी बारे में और कुछ देर तक, लिखना चाहता हूँ, या लिखुं मेरे मुहल्ले के कुछ कुत्ते-बिल्लियों की पीड़ा की कहानी, लॉक डाउन शुरू होते ही उनके भोजन कम होने लगे, जीर्ण-शीर्ण हो गया है देह, मैं घर के बाहर सडक पर उनको खाने देता था. मेरे खाने के बाद पड़े रहने वाले चावल, मछली, कुछदिन बाद मोहल्ले के एक दो लोगों ने ऑब्जेक्शन देना शुरू कर दिया, "आप खाना देते हैं. और वे यहाँ खाने आते हैं और यही पर टट्टी-पिसाब करते हैं, बंद कीजिए ये सब, देना ही है तो मैदान में जाकर दीजिए", क्या लिखूं मैं ? पहले तो यकीन ही नहीं हुआ, फिर देखा. प्राय हर दिन,हर बार,वे खाने के बगल में ही,

मैंने खाना देना भी बंद कर दिया।

आज भी दोपहर को देखा.

कुत्ते बैठकर चीख रहे हैं,

मुझे देखते ही बिल्लियां पैरों के पास मंडराने लगती हैं,

उनके सारे बदन में भूख की साफ़ निशानियां झलकती है,

क्या लिखूं मैं ?

आजकल,कुछ रसगुल्ले खरीदकर,

थोड़ी दूरी पर जाकर चुपके-चुपके देकर आता हूँ,

वे चखते हैं, खाते हैं,

और उनकी आँखों से आंसूं गिरते रहते हैं

क्या लिखूं मैं ?

दिन के बाद रातें,

रातों के बाद दिन,

इस सुन्दर जहां को महसूस करूँ,

असुंदर के बीच सुन्दर की तलाश करूँ,

या अनाहार,अर्द्धाहार से पीड़ित प्राणियों के मुँह को निहारूं ?

लिखूं ,क्या-क्या नहीं है नसीब में उनके,

क्या लिखूं मैं,?

सोचता हूँ और भी बहुतकुछ 1